

# डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, 1 और 2 सैमुअल, सत्र 5, 1 सैमुअल 7

© 2024 रॉबर्ट चिशोल्म और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 5, 1 शमूएल 7, पश्चाताप और विजय है।

अपने अगले पाठ में, हम 1 शमूएल 7 को देखेंगे। मैंने इसका शीर्षक पश्चाताप और विजय रखा है। आप शीर्षक से ही बता सकते हैं कि यह अध्याय कुछ हद तक उत्साहित करने वाला है। इस विशेष अध्याय में इज़राइल के लिए यह एक अच्छा अनुभव होने वाला है।

वे वास्तव में पश्चाताप करने जा रहे हैं और वे एक बड़ी जीत हासिल करने जा रहे हैं, या प्रभु उनके लिए एक बड़ी जीत हासिल करने जा रहे हैं। विषय, यदि हम अध्याय के विषय को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकें, तो मैं इसे इस प्रकार बताऊंगा, पश्चाताप और प्रभु के प्रति नवीकृत निष्ठा उनके साथ नवीकृत संबंध के लिए मूलभूत हैं। तो मैं दोहरा दूँ कि, पश्चाताप और प्रभु के प्रति नवीनीकृत निष्ठा उनके साथ नए रिश्ते के लिए मूलभूत हैं।

हमने सैमुअल को आखिरी बार अध्याय तीन में देखा था, जहाँ उसे एक युवा लड़के के रूप में प्रभु का भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाया गया था और वह एक भविष्यवक्ता के रूप में कार्य करना शुरू कर देता है और इज़राइल उत्तर में दान से लेकर बेशेबा तक उसकी भविष्यवाणी की स्थिति को पहचानता है। दक्षिण में। वह जो भी भविष्यवाणी करता है वह सच हो जाती है और उसे प्रभु के भविष्यवक्ता के रूप में सत्यापित और पुष्टि की जाती है, लेकिन फिर वह गायब हो जाता है क्योंकि याद रखें कि शुरुआती अध्यायों में सैमुअल और एली और उसके बेटों के बीच यह विरोधाभास है। सैमुअल भविष्य के नए इज़राइल का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रभु और एली और उसके बेटों के साथ उचित संबंध में बहाल और पुनः स्थापित होने जा रहा है, वे एक तरह से उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने प्रभु को अस्वीकार कर दिया है।

अध्याय चार में एली और उसके बेटे मर जाते हैं, सन्दूक पर कब्जा कर लिया जाता है, और इसलिए हम पलिशती क्षेत्र की ओर यात्रा करते हैं और फिर बेथ-शेमेश तक वापस आते हैं और यही सन्दूक की कहानी है। लेकिन यहां 1 सैमुअल 7 में सैमुअल फिर से दृश्य में आने वाला है। हम 1 शमूएल अध्याय 7 पद 1 में पढ़ते हैं, वास्तव में यह पद सन्दूक कथा के साथ जाता है, इसलिए किर्यत-यारीम के लोग आए और यहोवा के सन्दूक को ले गए।

वे उसे पहाड़ी पर अबीनादाब के घर में ले गए और यहोवा के सन्दूक की रखवाली करने के लिये उसके पुत्र एलीआजर को पवित्र किया। तो यह कथा समाप्त होती है। मुझे लगता है कि अध्याय का विभाजन संभवतः उस श्लोक के बाद होना चाहिए था, उसके पहले नहीं।

और फिर श्लोक 2 में हमने पढ़ा, यह एक लंबा समय था, कुल मिलाकर 20 साल, कि सन्दूक किर्यत्-यारीम में रहा। तो यहीं पर प्रभु की उपस्थिति है। और इस्राएल के सभी लोगों ने विलाप किया और यहोवा की खोज की।

इसलिए, लोगों को समग्र रूप से एहसास होता है कि प्रभु के साथ उनके रिश्ते में कुछ गड़बड़ है, और इसलिए वे शोक मनाते हैं और वे उसकी तलाश करते हैं। और सैमुअल, वह वहाँ है, वह वापस आ गया है। मुझे नहीं लगता कि उसने कभी छोड़ा है, यह सिर्फ शाब्दिक रूप से है कि हमने उससे नहीं सुना है क्योंकि ध्यान जहाज़ और उसकी यात्राओं पर रहा है।

और शमूएल ने इस्राएल के सारे घराने से कहा, यदि तुम अपने सम्पूर्ण मन से, दूसरे शब्दों में, निष्कपटता से यहोवा की ओर फिरते हो, तो पराए देवताओं और अशतोरैत से छुटकारा पाकर यहोवा के प्रति समर्पित होकर उसकी सेवा करो। केवल वही तुम्हें पलिशियों के हाथ से छुड़ाएगा। इसलिए हमें यहां पता चला कि इस्राएली विदेशी देवताओं की पूजा कर रहे हैं। बाद में 1 सैमुअल की पुस्तक में, सैमुअल यह उल्लेख करने जा रहा है कि वे बाल सहित अपने चारों ओर के विभिन्न लोगों के देवताओं की पूजा कर रहे थे।

वे अशतोरैथ की भी पूजा कर रहे हैं, जो संभवतः एस्टार्ट नामक देवी की छवियां थीं। और वह कह रहा है कि उन सभी विदेशी देवताओं को हटा दो। और वह उनकी छवियों का जिक्र कर रहे हैं, क्योंकि बुतपरस्त सोच में भगवान एक तरह से आते हैं और छवि में निवास करते हैं, और भगवान को छवि से अलग करना बहुत मुश्किल हो जाता है।

हमने सन्दूक कथा में सीखा है कि यहोवा अपने लोगों से इस तरह व्यवहार नहीं करता है। हां, सन्दूक उसकी उपस्थिति का प्रतीक है, लेकिन वह वहां नहीं रहता है और आप सन्दूक को नियंत्रित करके उसे नियंत्रित नहीं कर सकते। और इसलिये अपने आप को यहोवा के प्रति समर्पित कर दो और केवल उसी की सेवा करो और वह तुम्हें पलिशियों के हाथ से बचाएगा।

इस प्रकार इस्राएलियों ने अपने बाल देवताओं और अशतोरैत को दूर कर दिया। उन्होंने बाल की अपनी मूर्तियाँ, अस्तार्त की अपनी मूर्तियाँ ले लीं, उन्होंने उन्हें फेंक दिया, उन्होंने उनसे छुटकारा पा लिया, और वे केवल प्रभु की सेवा करने लगे। इसलिए, वे प्रभु की ओर वापस लौट आये।

और यह सिर्फ एक भावनात्मक बात नहीं है. यहाँ कुछ दम है. वे उन मूर्तियों से छुटकारा पा लेते हैं।

तब शमूएल ने कहा, सब इस्राएल को मिस्या में इकट्ठा करो, और मैं तुम्हारे लिये यहोवा से बिनती करूंगा। जब वे मिस्या में इकट्ठे हुए, तब उन्होंने जल निकाला, और यहोवा के साम्हने उण्डेल दिया। उस दिन उन्होंने उपवास किया, और वहीं यह मान लिया, कि हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।

और शमूएल मिस्या में इस्राएल का प्रधान था। आइए इस बिंदु पर पाठ में कुछ विवरणों के बारे में बात करें। इस्राएली यहोवा के साम्हने जल उण्डेलते हैं।

इसका क्या महत्व है? दुःभाषिए वास्तव में निश्चित नहीं हैं कि वहां क्या हो रहा है, लेकिन कुछ अच्छे विचार प्रस्तुत किए गए हैं। शायद यह उनकी पश्चाताप की भावना का प्रतीक था। यह ऐसा है मानो वे अपना हृदय प्रभु के सामने उँडेल रहे हों, जैसे यह पानी बह रहा है, जो जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से स्वयं को वंचित करने की उनकी इच्छा को दर्शाता है।

हम आज पानी भी नहीं पियेंगे। और इसका कुछ मतलब बनता है क्योंकि इसके ठीक बाद यह कहा गया कि उन्होंने उपवास किया है। तो शायद उन्होंने पानी लिया और उसे बाहर डाल दिया जैसे कि वे कह रहे हों कि हम कुछ समय के लिए खुद को भोजन और पानी से वंचित कर देंगे, यह दिखाने के लिए कि हम वास्तव में इस सब के बारे में कितने केंद्रित और ईमानदार हैं।

साथ ही, इस खंड में जिसे हमने अभी पढ़ा है, सैमुअल का कहना है कि यदि लोग वास्तव में पश्चाताप करते हैं तो वह उनके लिए हस्तक्षेप करेंगे। और यह एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका उपयोग इससे पहले केवल इब्राहीम और मूसा के लिए किया गया था। और इसलिए, यह संभव है कि वर्णनकर्ता सैमुअल को मूसा की भूमिका में कास्ट कर रहा हो।

और निःसंदेह मूसा ने कहा था, यहोवा तुम्हारे लिये मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता खड़ा करेगा। और निःसंदेह, अंततः यीशु ही वह भविष्यवक्ता है। लेकिन ऐतिहासिक विकास में, सैमुअल शुरू में वह भविष्यवक्ता है।

और संख्या 21.7 का संकेत हो सकता है जहां मूसा लोगों के लिए मध्यस्थता करता है। और उस अवसर पर लोगों ने कहा, हमने पाप किया है, जैसा कि वे यहां 1 शमूएल 7 में घोषित करते हैं। इसलिए, नए मूसा के रूप में शमूएल का यह विचार उभरना शुरू हो गया है। और निःसंदेह यह उसे इस्राएलियों की नजर में और निश्चित रूप से पाठक की नजर में जबरदस्त अधिकार और विश्वसनीयता प्रदान करता है।

और याद रखें कि हमने कहा था कि 1 सैमुअल के इस शुरुआती भाग में यह एक महत्वपूर्ण विषय है, एक भविष्यवक्ता के रूप में सैमुअल की विश्वसनीयता क्योंकि वह वही है जो शाऊल को अनिवार्य रूप से पद से हटा देगा और जो चुने हुए राजा के रूप में डेविड का अभिषेक करेगा। और इसलिए, सैमुअल के पास अधिकार है और वह जो करता है वह वास्तव में मायने रखता है। प्रभु उसके माध्यम से काम कर रहे हैं और इसलिए तथ्य यह है कि वह शाऊल को बताएंगे कि आप अस्वीकार कर दिए गए हैं और डेविड को बताएंगे कि आप प्रभु के नए चुने हुए शासक हैं, बहुत महत्वपूर्ण है और सैमुअल की किताबों में लेखक के डेविड-समर्थक विषय में योगदान देता है।

तो, यह यहाँ बहुत अच्छा लग रहा है। परन्तु पद 7, जब पलिशियों ने सुना कि इस्राएल मिस्या में इकट्ठे हुए हैं, तो पलिशियों के सरदार उन पर आक्रमण करने के लिये चढ़ आए। और जब इस्राएलियों ने यह सुना, तो वे पलिशियों के कारण डर गए।

उन्होंने शमूएल से कहा, हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दोहाई देना न छोड़, कि वह हमें पलिशियोंके हाथ से बचाए। तब शमूएल ने एक दूध पीता हुआ मेम्रा लिया, और उसे होमबलि

करके यहोवा को चढ़ाया। उसने इस्राएल की ओर से यहोवा की दोहाई दी और यहोवा ने उसे उत्तर दिया।

अब हम बिल्कुल निश्चित नहीं हैं कि इसका क्या मतलब है जब यह कहता है कि प्रभु ने उसे उत्तर दिया। क्या इसका मतलब यह है कि प्रभु ने आकर उससे बात की, एक दैवज्ञ ने उसे आश्वासन दिया कि सब कुछ ठीक हो जाएगा, कि वह लोगों को पलिशतियों से बचाएगा? तो, क्या यह किसी प्रकार का मौखिक संदेश है जो प्रभु ने शमूएल को युद्ध से पहले दिया था? या क्या यह केवल यह कह रहा है कि प्रभु ने पलिशतियों को हराकर उसे उत्तर दिया और अब हम आपको इसके बारे में बताने जा रहे हैं? शायद यह दोनों है। किसी भी दर पर, प्रभु इस्राएल की ओर से शमूएल की मध्यस्थता का जवाब देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने मूसा की मध्यस्थता के समय मूसा के साथ किया था।

और इस प्रकार, जब शमूएल होमबलि चढ़ा रहा था, पलिशती इस्राएल से युद्ध करने के लिये निकट आए। और यह बहुत दिलचस्प है कि पाठ इसे कैसे चित्रित करता है। यह एक साथ होने वाली कार्रवाई की तरह है।

जैसे-जैसे शमूएल बलिदान दे रहा है, पलिशती निकट आ रहे हैं। और इसलिए, कहानी में तनाव बढ़ रहा है। परन्तु उस दिन यहोवा ने पलिशतियों के विरुद्ध बड़े बड़े शब्द गरजाए, और उन्हें ऐसा घबरा दिया कि वे इस्राएलियों के साम्हने से हार गए।

और इसलिए, प्रभु बिल्कुल वही करते हैं जो हन्ना ने प्रार्थना की थी कि वह करेंगे। उसने ऐसे समय की आशा की थी जब प्रभु अपने शत्रुओं पर गरजेगा। और वह यहाँ ऐसा करता है।

इस्राएल के लोग मिस्पा से बाहर निकले और पलिशतियों का पीछा किया, और बेत कार के नीचे एक बिंदु तक रास्ते में उन्हें मार डाला। और तब शमूएल ने एक पत्थर लिया, और उसे मिस्पा और शीन के बीच में खड़ा किया। और उसने उसका नाम एबेनेज़र रखा।

हम उस नाम को एबेनेज़र स्कूज से जानते हैं। लेकिन इचबॉर्ड की तरह, इन नामों की उत्पत्ति कभी-कभी बाइबिल में होती है। और वे वास्तव में हिब्रू नाम हैं।

एबेनेज़र कहते हैं, अब तक प्रभु ने हमारी मदद की है। वह हमें बचाने और हमें सशक्त बनाने के लिए यहां आए हैं। और एबेनेज़र, एबेनेज़र नाम का अर्थ है मदद का पत्थर।

और इसलिए, यह वह सहायता विचार है। पत्थर वहीं है। यह एबेन है।

और यहोवा के पास एजेर है। सैमुअल कहते हैं, उन्होंने हमारी मदद की है। तो एक बार फिर, यह पत्थर आने वाली पीढ़ियों के लिए रहेगा।

और जब वे आएं, तो वे इसे देख सकते हैं और कह सकते हैं, आप जानते हैं कि यहां क्या हुआ था। यह भी दिलचस्प है कि उन्होंने इसे एबेनेज़र नाम दिया है क्योंकि आपको अध्याय चार और

पांच, या विशेष रूप से चार में याद होगा, इस्राएलियों ने एबेनेज़र नामक स्थान पर एबेनेज़र में पलिशितियों से लड़ाई की थी। अब यह एक अलग एबेनेज़र है।

पत्थरों का यह स्थान अलग-अलग स्थान पर है। लेकिन क्या यह दिलचस्प नहीं है कि सैमुअल ने इसे यह नाम दिया है, न केवल इस तथ्य को याद करने के लिए कि भगवान ने हमारी मदद की है, बल्कि यह अध्याय चार में हुई हार को उलटने के लिए भी है। पलिशितियों ने एबेनेज़र नामक स्थान पर इस्राएलियों को हराया था।

अब इस्राएलियों ने उन पर पलटवार किया है। यहोवा ने पलिशितियों के विरुद्ध आकर, गरजकर, और इस्राएलियों को विजय दिलाकर बाजी पलट दी है। और इसलिए, सैमुअल कहते हैं, हमें यहीं एक नया एबेनेज़र मिला है।

पुराने को एक तरह से रद्द कर देता है। हम इसे याद रखेंगे क्योंकि प्रभु ने हमें जीत दिलाई है। उन्होंने हार को जीत से बदल दिया है।

इस प्रकार, पलिशितियों को दबा दिया गया और उन्होंने इस्राएल के क्षेत्र पर दोबारा आक्रमण नहीं किया। मुझे नहीं लगता कि इसका मतलब हमेशा के लिए है क्योंकि बाद में हमारे पास पलिशती आक्रमणों के 1 सैमुअल में विवरण हैं। मुझे लगता है कि इसका मतलब इस अधिक तात्कालिक संदर्भ में है।

उन्होंने कोई जवाबी हमला नहीं किया। इसलिए, कुछ समय के लिए इस्राएली पलिशितियों पर प्रभुत्वशाली शक्ति थे। और यह कहता है कि शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिशितियों के विरुद्ध रहा।

इसलिए, प्रभु अपने लोगों की ओर से हस्तक्षेप कर रहे थे। और एक्रोन से लेकर गत तक के जो नगर पलिशितियों ने इस्राएल से छीन लिए थे, वे उसे लौटा दिए गए। और इस्राएल ने पड़ोसी देश को पलिशितियों के वश से छुड़ाया।

इस प्रकार, इस्राएली उस क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने में सक्षम हैं जो उन्होंने इससे पहले पलिशितियों से खो दिया था। और इस्राएल और एमोरियों के बीच शांति थी। एमोराइट्स मूल कनानी लोग हैं जो ट्रांसजॉर्डन क्षेत्र में भी रहते हैं।

और इसलिए मुझे लगता है कि संभवतः क्या हुआ, क्या एमोरी लोगों ने इस्राएल की शक्ति को पहचाना और निर्णय लिया कि उनके साथ संधि करना बेहतर होगा। तो, देश में एक प्रकार की शांति आ गई है। और शमूएल जीवन भर इस्राएल पर न्याय करता रहा।

और मुझे लगता है कि इस मामले में वह केवल सामान्य तरीके से न्यायाधीश नहीं है जैसा कि हम न्यायाधीशों की पुस्तक में देखते हैं, बल्कि वह वास्तव में मामलों का फैसला कर रहा है। यहां उनके पुत्रों के बारे में जो कुछ कहा गया है, उससे यह पता चलता है। वह वर्ष-दर-वर्ष बेतेल से लेकर गिलगाल से लेकर मिस्पा तक, और इस्राएल के मध्य क्षेत्र तक, उन सभी स्थानों में इस्राएल का न्याय करता हुआ, परिक्रमा करता रहा।

इसलिए, वह बस एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहेगा। लोग उसके पास कानूनी मामले लेकर आते थे और वह बुद्धिमानी और निष्पक्ष निर्णय देता था। और मुझे यकीन है कि ऐसा करने में उसने प्रभु से सलाह ली होगी।

परन्तु वह सदैव रामा को लौट जाता था जहाँ उसका घर था। और वहीं उसने इस्राएल का न्याय भी किया। और उस ने वहाँ यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।

इसलिए, शमूएल देश में न्याय ला रहा है और वह देश में उचित प्रकार की पूजा ला रहा है। प्रभु शमूएल के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। तो, आइए इस अध्याय में उठने वाले कुछ अन्य मुद्दों के बारे में बात करें, यह बहुत ही सकारात्मक अध्याय है।

जब प्रभु पलिशियों के खिलाफ गरजते हैं और उन्हें हरा देते हैं, तो यह काफी महत्वपूर्ण है, खासकर कहानी में पहले जो होता है उसके आलोक में। याद करो जब इस्राएलियों ने कहा था, हम पश्चाताप करने के लिए तैयार हैं। और शमूएल कहता है, अच्छा, अपनी सब मूर्तों से छुटकारा पाकर इसे सिद्ध करो।

और वे अपने बाल्स और एस्टार्ट प्रतीकों को फेंक देते हैं और उन्हें इन सब से छुटकारा मिल जाता है। और याद रखें कि हमने बाल के बारे में क्या कहा था। हमने पिछले पाठ में उसकी चर्चा की थी।

बस थोड़ा सा समीक्षा करने के लिए, वह प्रजनन क्षमता के देवता हैं। वह बारिश लाने के लिए जिम्मेदार है। और इसलिए, यदि आप बहुत सारी फसलें चाहते हैं और आप बहुत सारे बच्चे चाहते हैं, तो आप बाल की पूजा करते हैं।

और इस्राएली ऐसा ही कर रहे थे। याद रखें हन्ना ने इनकार कर दिया था। वह प्रभु के प्रति वफादार रही और न्यायसंगत साबित हुई।

लेकिन बहुत से लोग बाल की पूजा कर रहे थे, इसलिए उन्होंने इन बाल मूर्तियों को फेंकने का फैसला किया। खैर, बाल एक तूफान देवता है। तूफान देवता के रूप में, वह कथित तौर पर तूफान के तत्वों को नियंत्रित करता है।

वह गड़गड़ाहट और बिजली को नियंत्रित करता है। और वास्तव में, इन कनानी ग्रंथों में, गड़गड़ाहट उसकी आवाज़ है। वे इसे बाल की पवित्र आवाज़ कहते हैं।

धार्मिकता के अर्थ में पवित्र नहीं, बल्कि एक आवाज़ जो अद्वितीय और अलग है और अलग है। और बाल गरज के माध्यम से बोलता है, और वह अपने शत्रु के विरुद्ध एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में आता है। देखिए, जब तूफान देवता आपके पक्ष में होता है, तो वह फसलें उगा सकता है, लेकिन वह आपके दुश्मनों को हराने के लिए तूफान के तत्वों का भी उपयोग कर सकता है।

और इसलिए, बाल एक तूफान देवता है जो आता है और गरजता है, और वह बिजली भी गिराता है। और बिजली को उसके भाले के रूप में देखा जाता है। तो उनकी सोच में, बाल तूफान को नियंत्रित करता है।

लेकिन क्या यह महत्वपूर्ण नहीं है कि जब वे अपनी बाल मूर्तियों को फेंक देते हैं, तब प्रभु उनके शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में आते हैं? और वह स्वयं को कैसे प्रकट करता है? तूफान में दुश्मन पर गरजता है। मानो इस्राएलियों से कह रहा हूँ, आप जानते हैं, आपने बाल की मूर्तियों से छुटकारा पाकर एक बुद्धिमान निर्णय लिया क्योंकि कनानियों के कहने के बावजूद, वह तूफान को नियंत्रित नहीं करता है। मैं तूफान को नियंत्रित करता हूँ।

और यहोवा यह नहीं कह रहा है, मैं तूफान का देवता हूँ। नहीं, वह उससे भी बड़ा है। लेकिन वह निर्माता के रूप में सभी चीजों को नियंत्रित करता है।

वह प्रकृति के सभी तत्वों को नियंत्रित करता है। वह मृत्यु पर भी प्रभुत्व रखता है। और वह तूफान को नियंत्रित करता है, और पलिशियों को हराने के लिए तूफान में आता है।

और यह वास्तव में न्यायाधीशों और सैमुअल की पुस्तकों में इसका अंतिम उदाहरण है। भगवान बाल के विरुद्ध एक स्पष्ट विवाद है, जो न्यायाधीशों में शुरू होता है और फिर यहां शमूएल के पहले भाग तक चलता है। ऐसा लगता है कि, इस घटना के बाद, इज़राइल में बाल पूजा इतनी बड़ी समस्या नहीं है।

लेकिन तो चलिए वापस चलते हैं और समीक्षा करते हैं कि यह विवाद कैसे विकसित हुआ है। यदि हम न्यायाधीशों के प्रारंभिक अध्यायों में जाएँ, तो हम पढ़ते हैं कि इस्राएली मूर्तिपूजक थे, और बाल उन देवताओं में से एक था जिनकी वे पूजा करते थे। उन्होंने बाल देवताओं की पूजा की।

यह आमतौर पर बहुवचन होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान बाल कथित तौर पर भूमि के चारों ओर विभिन्न मंदिरों में प्रकट होंगे, और उनका प्रतिनिधित्व इन मूर्तियों द्वारा किया जाएगा। वह एक तरह से इन मूर्तियों में निवास करेगा।

और इसलिए कभी-कभी बाइबल में, वे इस बात पर जोर देने के लिए बालों का उल्लेख करेंगे कि ये वे छवियां हैं जिनकी लोग पूजा कर रहे थे। लेकिन लोगों की सोच के पीछे एक भगवान है। खैर, जर्जों के अध्याय 4 और 5 में डेबोरा और बराक की कहानी याद रखें। अध्याय 4 उस अवसर पर जो हुआ उसका वर्णन है, और अध्याय 5 एक कविता है जो प्रभु द्वारा दी गई जीत को दर्शाते हुए लिखी गई है।

भविष्यवक्ता दबोरा ने बराक से कहा, प्रभु चाहता है कि तुम बाहर जाओ और लड़ो। वैसे, बराक के नाम का अर्थ बिजली का बोल्ट है, जो मुझे इस संदर्भ में दिलचस्प लगता है। वह शुरुआत में कुछ भी नहीं था।

वह झिझक रहा था। वह बाहर नहीं जाना चाहता था। उन्होंने कहा, अगर तुम मेरे साथ चलोगी तो ही।

वह अपने साथ एक नबी रखना चाहता था ताकि उसे प्रभु से संदेश मिल सके। लेकिन दबोरा उससे कह रहा है, मूल रूप से, प्रभु चाहता है कि तुम जाओ और लड़ो और जीत हासिल करो। बेशक, कनानियों के पास सीसरा नाम का एक सेनापति है, और उसके पास ये सभी रथ हैं, सैकड़ों रथ, लोहे के रथ, जिसका मतलब यह नहीं है कि वे लोहे से बने हैं, बल्कि वे लोहे के हिस्सों से मजबूत हैं, यों कहिये।

और इसलिए वे विशेष रूप से अच्छे रथ हैं। और इसलिये इस्राएलियों के पास रथ नहीं हैं। वास्तव में, यहोवा व्यवस्था में कहता है, मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे पास रथ हों।

मैं चाहता हूँ कि तुम बाहर जाकर लड़ो और मुझ पर भरोसा करो। जब तुम युद्ध में उतरोगे तो एक तरह से नुकसान में रहोगे और इससे साबित हो जाएगा कि मैं ही वह व्यक्ति हूँ जो तुम्हें जीत दिलाता है। अतः बराक और उसकी सेना कनानियों के विरुद्ध आगे बढ़ती है, परन्तु यह अच्छा नहीं लगता।

कनानियों के पास ये सभी रथ हैं, लेकिन यहोवा ने बड़ी जीत हासिल की। वह कनानी सेनाओं को भ्रमित कर देता है। और कुछ ने पूछा है, अच्छा, उस लड़ाई में वास्तव में क्या हुआ था? खैर, मुझे लगता है कि अध्याय पाँच की कविता हमें उस अवसर पर क्या हुआ था, इसकी कुछ जानकारी देती है।

और मैं वहाँ वापस जा रहा हूँ और न्यायाधीशों के अध्याय पाँच में कुछ छंद पढ़ूँगा। यह गीत दबोरा और बराक गा रहे हैं, और, हे भगवान, जब आप सेईर से निकले थे, जब आप एदोम की भूमि से चले थे, तो भगवान को सिनाई की दिशा से दक्षिण-पूर्व से मार्च करते हुए चित्रित किया गया है, जो निश्चित रूप से है वह एक पवित्र पर्वत है जिस पर वह निवास करता है। पृथ्वी हिल गई, आकाश बरस पड़ा, बादल जल बरसाने लगे, और सीनै पर्वत यहोवा के साम्हने, अर्थात् इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के साम्हने कांप उठे।

तो, वे यह मान रहे हैं कि तूफान आया था, पानी आया था। और फिर बाद में अध्याय पाँच में, हमने पढ़ा, आकाश से तारे लड़े। वे अपने मार्ग से सीसरा के विरुद्ध लड़े।

इसलिये आकाश के तारे इस्राएल की ओर से लड़ रहे थे। और वास्तव में, इस संस्कृति में, कुछ सबूत हैं कि उनका मानना था कि तारे कभी-कभी बारिश के स्रोत होते थे। किसी भी दर पर, यह देवदूतीय सभा है जो प्रभु की ओर से लड़ती है।

और फिर पद 21 कहता है, कीशोन नदी उन्हें बहा ले गई। सदियों पुरानी नदी, कीशोन नदी, मेरी आत्मा पर आगे बढ़ो, मजबूत बनो। तो, ऐसा लगता है मानो किशोन में अचानक बाढ़ आ गई हो।

और इसलिए मुझे लगता है कि जो हुआ वह यह था कि भगवान बाल की तरह एक तूफान में आए, और कनानी सेना के खिलाफ प्रदर्शन किया कि वह वही हैं जो तूफान को नियंत्रित करते हैं। और उसने ऐसा किया, कि मूसलाधार बारिश होने लगी। वादी किशोन में बाढ़ आ गई।



और आप जानते हैं, तूफान के बीच में जब अचानक बाढ़ आ जाती है, तो रथ बहुत अच्छी तरह से काम नहीं करते हैं। और इसलिए, कहानी में क्या हुआ, सीसरा अपने रथ से उतर गया और वह भाग गया और इस्राएलियों ने एक बड़ी जीत हासिल की। तो, कनानियों पर प्रभु की महान जीत का जश्न मनाने के अलावा, यहां बाल विवाद भी है।

यह थोड़ा सूक्ष्म हो सकता है, लेकिन यह मौजूद है। बाल उपासकों का सामना करते समय प्रभु ने अपने लोगों को दिखाया कि वह वही था जिसने तूफान को नियंत्रित किया था। उन्हें कनानियों और उनके रथों और उनके देवता बाल से डरने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यहोवा ही वह है जो उन सभी को नियंत्रित करता है, बाल को नहीं।

और उसने उन्हें बड़ी विजय दिलाई। थोड़ी देर बाद, हम गिदोन की कहानी की ओर बढ़ते हैं। और बाल विवाद अधिक स्पष्ट है और यह गिदोन कहानी में अधिक स्पष्ट और प्रत्यक्ष है।

याद रखें, गिदोन एक इस्राएली शहर में रहता है, लेकिन उस शहर में, उनके पास बाल की वेदी है और वे बाल देवता की पूजा करते हैं। और इसे गिदोन के पिता ही चला रहे हैं। और यहोवा ने गिदोन से कहा, मैं चाहता हूँ, कि तू उस वेदी को ढा दे।

वह ऐसा रात के समय में करता है। मुझे लगता है कि ऐसा करने में सक्षम होने के लिए मुझे ऐसा करना होगा। आपको संभवतः इसे रात में करना होगा, क्योंकि अन्यथा, लोग कहेंगे, आप हमारी वेदी के साथ क्या कर रहे हैं? और वे वहाँ तेजी से जा रहे हैं।

लेकिन उन्हें पता चला कि गिदोन ने ऐसा किया है और वे उसे मारने के लिए तैयार हैं। वह वही कर रहा है जो कानून कहता है कि आपको करना चाहिए। बुतपरस्त वेदियों को तोड़ें और बुतपरस्त देवताओं से छुटकारा पाएं।

वह प्रभु की आज्ञा का पालन कर रहा है और वह वही कर रहा है जो कानून कहता है कि आपको करना चाहिए। और इस्राएली इस कारण उसे मार डालने को तैयार हैं। हमने पिछले पाठ में इस बारे में थोड़ी बात की थी, लेकिन गिदोन के पिता हस्तक्षेप करते हैं और कहते हैं, मुझे नहीं लगता कि हमें बाल की लड़ाई लड़नी चाहिए।

वह नाराज हो सकता है। मैं अब व्याख्या कर रहा हूँ। वह नाराज हो सकता है।

आइए उसे अपनी लड़ाई खुद लड़ने दें। मुझे लगता है कि उन्होंने अपने बेटे को बचाने के लिए भी ऐसा कहा होगा। वह कहते हैं, किसी भी कीमत पर, हम उन्हें एक नया नाम देंगे, येरुव बाल।

तो, गिदोन का नाम अब येरुव बाल है। और जैसा कि आप कहानी पढ़ रहे हैं, कभी-कभी गिदोन नाम का प्रयोग किया जाता है, कभी-कभी येरुव बाल का। मुझे लगता है कि जब येरुव बाल का उपयोग किया जा रहा है, तो यह इसके विवादास्पद आयाम को थोड़ा और उजागर कर रहा है।

तो, इसका मतलब यह है कि बाल को लड़ने दिया जाए। बाल को प्रयास करने दो। और इसलिए, गिदोन का अब एक नाम है जो भगवान बाल के लिए एक चुनौती है।

और इसलिए इससे मैं थोड़ा घबरा जाऊंगा। अगर मैं ऐसे शहर में पला-बढ़ा हूँ जहाँ हर कोई बाल में विश्वास करता है और उसकी पूजा करता है, तो मुझे लगता है कि आप कम से कम भावनात्मक स्तर पर इससे प्रभावित होंगे। और इसलिए, मुझे लगता है कि गिदोन चिंतित है।

और इसलिए, प्रभु फिर उससे कहते हैं, सैनिकों को इकट्ठा करो और तुम बाहर जाकर लड़ोगे। लेकिन गिदोन फिर से झिझक रहा है, और वह एक परीक्षण करना चाहता है। और इसलिए, वह यह अजीब परीक्षण करता है जिसमें ओस और भेड़ का ऊन शामिल होता है।

दुनिया में वहाँ क्या चल रहा है? ये कुछ परीक्षण हैं जो वह यह देखने के लिए करते हैं कि क्या भगवान मूल रूप से ओस को नियंत्रित कर सकते हैं। खैर, यदि आप बाल पौराणिक कथा को समझते हैं तो यह बिल्कुल सही समझ में आता है क्योंकि बाल न केवल बारिश को नियंत्रित करता है, वह ओस को भी नियंत्रित करता है। ओस को कृषि उर्वरता के स्रोत के रूप में देखा जाता है, और बाल ओस को नियंत्रित करते हैं।

दरअसल, एक पाठ में बाल की बेटियों के नाम बताए गए हैं। और उनकी एक बेटि का नाम तालिया है, जिसका अर्थ है ओस वाली। तो, वह ओस जैसी है।

तो, उनकी बेटियों में से एक का नाम ही इस तथ्य को दर्शाता है कि इस सब पर उनका नियंत्रण है। तो, गिदोन क्या कर रहा है? युद्ध में जाने से पहले वह यह सुनिश्चित कर रहा है कि इस्राएल के परमेश्वर याहवे, जिन्होंने हाल ही में खुद को गिदोन के सामने प्रकट किया है, वास्तव में उन तत्वों को नियंत्रित करते हैं जिन्हें बाल कथित रूप से नियंत्रित करते हैं। और इसलिए, प्रभु, बहुत धैर्यपूर्वक, गिदोन को दिखाते हैं, मैं इस सब को नियंत्रित करता हूँ, बाल को नहीं।

और इसलिए, जैसे-जैसे कहानी सामने आती है, सवाल उठता है कि क्या बाल वापस लड़ेगा? और देखो, गिदोन अपने जीवन से गुजरता है। वह जीत हासिल करता है। वैसे, वह कुछ मूर्खतापूर्ण निर्णय लेता है।

वास्तव में अच्छी तरह खत्म नहीं होता। लेकिन गिदोन के जीवन में किसी भी समय बाल ने पलटवार नहीं किया। लेकिन फिर आप न्यायियों अध्याय 9 पर आते हैं, और गिदोन का अबीमेलक नाम का एक बेटा है।

अजीब बात है, उसने इस लड़के का नाम अबीमेलक रखा, मेरा पिता राजा है। इससे गिदोन के अपने बारे में दृष्टिकोण के बारे में क्या पता चलता है? इस बालक का जन्म एक उपपत्नी से हुआ था। उसके ये सभी सौतेले भाई हैं।

तो, गिदोन एक राजा की तरह रह रहा है। याद रखें, उसने इस्राएलियों द्वारा राजा बनाए जाने से इनकार कर दिया था, जो बुद्धिमानी थी, लेकिन उसने उनके पैसे ले लिए। और वह पत्नियाँ जमा करने लगा।

और इसलिए, वह एक राजा की तरह रह रहा था, भले ही वह एक राजा होने की ज़िम्मेदारी नहीं चाहता था। और उस ने भक्तिपूर्वक कहा, हे प्रभु, तेरे पास एक राजा है। खैर, फिर इस तरह से व्यवहार क्यों करें? लेकिन उसने इन सभी पत्नियों और बेटों को जमा कर लिया था, और अबीमेलेक ने फैसला किया कि कम से कम शेकेम शहर के लिए एक राजा होना बेहतर होगा।

और इसलिए, वे उसके साथ गठबंधन बनाते हैं, और वे इस ऑपरेशन को बाल मंदिर से वित्तपोषित करते हैं। और इसलिए अबीमेलेक स्पष्ट रूप से बाल उपासक है, और शेकेमवासी पूजा कर रहे हैं। और यदि आप शेकेम का अध्ययन करते हैं, तो यह वास्तव में भ्रमित करने वाला है।

शेकेम में कौन रहता है, इस्राएली या कनानी? मैं हाँ कहूँगा। जब आप कनानी आबादी के साथ अंतर्जातीय विवाह करते हैं, तो वंशावली वास्तव में भ्रमित हो जाती है। और इसलिए कुछ ग्रंथों से यह संकेत मिलता है कि इस्राएली वहाँ रह रहे हैं।

कुछ लोग 'नहीं' का संकेत देते प्रतीत होते हैं; वहाँ कनानी लोग रहते हैं। खैर, दोनों वहीं रह रहे हैं। और आबादी कुछ हद तक मिश्रित हो गई है।

और इसलिए, अबीमेलेक ने अपने 70 सौतेले भाइयों को मार डाला। वह राजा बनने के लिए उनकी हत्या कर देता है। आप मेरे नेतृत्व में राजशाही चाहते हैं, इन पुत्रों के साथ कुलीनतंत्र नहीं।

और इसलिए, ऐसा लगता है जैसे बाल जवाबी कार्रवाई कर रहा है। यह वास्तव में, गिदोन की प्रजनन क्षमता को नष्ट करके, जैसे कि अबीमेलेक के माध्यम से उसके बेटों को छीनकर, जो स्पष्ट रूप से बाल उपासक है, करता है। लेकिन कहानी के अंत तक क्या होता है? शेकेमियों और अबीमेलेक के बीच मतभेद हो जाते हैं, और यह प्रभु का काम है, क्योंकि एक जीवित भाई योतम ने प्रार्थना की थी कि प्रभु हस्तक्षेप करेंगे और न्याय लाएंगे, कि वह अपने मारे गए भाइयों को दोषमुक्त कर देंगे।

और प्रभु ऐसा करता है। वह एक दुष्ट आत्मा भेजता है जो अबीमेलेक और शेकेमियों के बीच शत्रुता पैदा करती है। अध्याय के अंत तक, शेकेमियों के नगर जला दिए गए हैं, और मुझे लगता है कि उन नगरों में कोई बाल मंदिर था।

और साथ ही, अबीमेलेक को, अजीब तरह से, एक महिला द्वारा मार दिया जाता है। वह दीवार के बहुत करीब पहुँच जाता है, और एक महिला चक्की का पाट नीचे फेंक देती है और उसका सिर फोड़ देती है। और वह मर रहा है, लेकिन वह अपने कवच वाहक से उसे भगाने के लिए कहता है, इसलिए यह नहीं कहा जाएगा कि एक महिला ने उसे मार डाला।

लेकिन कहानी वहीं बाइबिल में है। क्षमा करें, अबीमेलेक, एक स्त्री ने तुम्हें मार डाला। अंत में आत्महत्या उस तथ्य को खत्म नहीं कर सकती।

तो, यदि वास्तव में बाल ने कहानी के अंत तक अबीमेलेक और शेकेमियों पर पलटवार किया, तो कौन जीतता है? प्रभु जीतता है, और वह बाल से अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करता है। मैं बाल के बारे

में ऐसे बात कर रहा हूँ मानो वह सचमुच अस्तित्व में हो। और यह आपको अजीब लग सकता है, क्योंकि हम एकेश्वरवादी हैं।

हमारा मानना है कि ईश्वर केवल एक है। लेकिन मुझे लगता है कि प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया और पुराने नियम में, उनके पास एकेश्वरवाद की इतनी आधुनिक धारणा नहीं है। बुतपरस्त देवताओं के पीछे एक वास्तविकता है।

वे केवल उन लोगों की कल्पना की उपज नहीं हैं जो उनकी पूजा करते हैं। अब, मूर्तियाँ कुछ भी नहीं हैं। यशायाह ने मूर्तियों पर प्रकाश डाला।

मूर्तियाँ केवल मानव निर्मित हैं, और देवता उन मूर्तियों से अधिक शक्तिशाली नहीं हैं जो उनका प्रतिनिधित्व करती हैं। लेकिन उनका मानना था कि इन देवताओं के पीछे एक वास्तविकता थी, क्योंकि वास्तव में ऐसा है। जैसे-जैसे बाइबल सामने आती है और हमें इन मामलों के बारे में और अधिक रहस्योद्घाटन मिलता है, हम जानते हैं कि ऊंचे स्थानों पर आध्यात्मिक शक्तियाँ होती हैं।

पॉल उनके बारे में बात करते हैं। वास्तव में, चर्च के रूप में हम जिस आध्यात्मिक लड़ाई में हैं, वह मांस और रक्त के विरुद्ध नहीं है। यह चर्च के मानवीय शत्रुओं के विरुद्ध नहीं है, जितना कि उन्हें सशक्त बनाने वाली आध्यात्मिक शक्तियों के विरुद्ध है।

और आप इसे पुराने नियम में देखते हैं। परमेश्वर ने राष्ट्रों पर अधिकार स्वर्गदूतों को सौंप दिया। आपने इसके बारे में डैनियल में पढ़ा।

वहाँ यूनान का राजकुमार और फारस का राजकुमार है। हम उन संदर्भों में मानव राजकुमारों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम देवदूत शक्तियों के बारे में बात कर रहे हैं जो भगवान के महादूतों में से एक माइकल के साथ युद्ध में हैं।

और इसलिए, मुझे विश्वास है कि इन बुतपरस्त देवताओं के पीछे आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं। और इसलिए, जब बाइबल उनके बारे में ऐसे बात करती है जैसे कि वे अस्तित्व में हैं, तो यह सटीक है। यह सटीक है।

और इस प्रकार, यहोवा मानो बाल के विरुद्ध युद्ध में लगा हुआ है। लेकिन वास्तव में, जब हम इसे इसके बड़े विहित या बाइबिल संदर्भ में देखते हैं, तो यह वास्तव में शैतान और स्वर्गदूतों के खिलाफ एक लड़ाई है, जिन्हें अधिकार सौंपा गया था, लेकिन उन्होंने विद्रोह कर दिया और अंधेरे पक्ष में बदल गए। और वे इन आस-पास के देशों में इन उपासकों को एक तरह से गुलाम बना रहे हैं।

मैं आपको 2 राजा 3 में एक अंश दिखा सकता हूँ जहाँ मोआब का देवता कमोश, इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ता हुआ प्रतीत होता है। इससे इस्राएलियों को उस मोआबी शहर पर कब्जा करने से हतोत्साहित नहीं होना चाहिए था, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा हुआ। तो, बाल विवाद चल रहा है।

निःसंदेह, जब हम सैमसन पहुंचते हैं, तो बहस डोगोन के खिलाफ होती है, जो याद दिलाते हैं, जैसा कि हमने पिछले पाठ में कहा था, वह प्रजनन देवता बाल का पिता भी है। और इसलिये यहोवा भी उसके विरुद्ध है। फिर हम 1 शमूएल में पहुँचते हैं, और हमने जो देखा वह यह है कि हन्ना, अपने धन्यवाद गीत में, इस तथ्य का जश्र मना रही है कि प्रभु ने उसे सही ठहराया है।

वह बच्चा पैदा करने के लिए बाल उपासक नहीं बनी, जैसा कि बहुत से लोग करते होंगे। उसने ऐसा नहीं किया. उसने प्रभु पर भरोसा किया, और प्रभु ने अंततः उसे वह पुत्र दिया और उसे सही ठहराया।

हमने उनकी प्रशंसा और धन्यवाद के गीत में बताया कि हमने पिछले पाठ में देखा था कि इसमें बाल विवाद चल रहा है। केवल प्रभु ही पवित्र हैं। खैर, कनानियों का मानना था कि बाल पवित्र था।

नहीं, ऐसा नहीं है, हन्ना कहती है। और प्रभु जीवन और मृत्यु पर प्रभुता सम्पन्न है। और आपको बाल के बारे में हमारी पिछली चर्चा याद होगी।

बाल को दो प्राथमिक शत्रुओं से लड़ना है, समुद्र के देवता यम, जिसे वह हराता है, और मृत्यु के देवता, मोट। और यह हिंसक संघर्ष चलता रहता है, और बाल वास्तव में एक अवसर पर हार जाता है और उसे मृतकों की दुनिया में उतरना पड़ता है। वह अनात की मदद से पुनर्जीवित हो जाता है, जो मोट को मार देता है, लेकिन मोट फिर से प्रकट होता है और बाल और मोट संघर्ष करते हैं, और यह सब मौसमी स्थिति को दर्शाता है।

जब बाल नियंत्रण में होता है, तो सब कुछ अपने उचित समय पर होता है। वर्षा अपने उचित समय पर होती है, और चीज़ें बढ़ती हैं। लेकिन जब लंबे समय तक सूखा पड़ता है, तो यह मनुष्यों की दुनिया में एक संकेत है कि बाल देवताओं की दुनिया में हार गए हैं और मोट अब नियंत्रण में हैं।

खैर, हिब्रू बाइबिल में, भगवान कभी नहीं मरते। और भले ही मृत्यु एक शत्रु है, प्रभु हमेशा मृत्यु पर प्रभुत्व रखते हैं, और हन्ना इसे पहचानती है। प्रभु जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करते हैं।

और बाल में, हालाँकि, वह मर सकता है। ऐसा नहीं है प्रभु. इसलिए, मुझे लगता है कि इसमें एक विवादास्पद आयाम भी है, क्योंकि हन्ना ने जीवन और प्रजनन क्षमता के लिए भगवान पर भरोसा किया है, और भगवान ने खुद को साबित कर दिया है।

और फिर हन्ना के गीत के अंत में, वह उस समय की आशा करती है जब प्रभु अपने दुश्मनों के खिलाफ गरजेंगे, और वह अपने अभिषिक्त को सही ठहराएंगे। वह एक राजा के आने की प्रतीक्षा कर रही है। यहाँ 1 शमूएल अध्याय 7 में प्रभु ने अपने शत्रुओं पर गरजा है। और इसलिए, हन्ना की कहानी में बाल विवाद है।

और फिर, निःसंदेह, हमने पहले देखा कि कैसे भगवान दागोन को भगवान के सन्दूक द्वारा अपमानित किया गया था जब पलिशती भगवान को अपने मंदिर में ले गए थे। और इसलिए वह

आयाम, विवादास्पद आयाम, जारी है। और अब यहाँ इसकी परिणति 1 शमूएल 7 में होती है, जहाँ इस्राएली निर्णय लेते हैं, हम वास्तव में पश्चाताप करने का इरादा रखते हैं, और हम अपनी बाल मूर्तियों को फेंकने जा रहे हैं।

और प्रभु आते हैं, जैसा कि हमने पहले इस चर्चा में बताया था, प्रभु आते हैं और मूल रूप से कहते हैं, बहुत बुद्धिमान निर्णय, क्योंकि मैं तूफान को नियंत्रित करता हूँ, और मैं आकर पलिशियों के खिलाफ गरजूंगा और उन्हें हराऊंगा। तो, इस पूरे खंड में, न्यायाधीशों, और 1 शमूएल में, प्रभु अपने लोगों को प्रदर्शित कर रहे हैं कि वह सभी पर संप्रभु है, और वह इन बुतपरस्त देवताओं दागोन और बाल से असीम रूप से श्रेष्ठ हैं। इसका एक सांस्कृतिक आयाम भी है, क्योंकि यदि आप एक इसराइली हैं और आप पलिशियों और कनानियों या किसी और के हाथों इतनी सारी हार का सामना कर रहे हैं, तो अब इज़राइल अपने हिस्से की लड़ाई जीतता है, लेकिन वे इसमें बहुत कुछ हारते भी हैं। न्यायाधीशों।

वे पराजित हो जाते हैं, और ये विदेशी राष्ट्र उन पर नियंत्रण कर लेते हैं। एक प्रवृत्ति हो सकती है, यदि आप आध्यात्मिक नहीं हैं और वास्तव में उस वास्तविक कारण पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं कि आप क्यों हार रहे हैं, तो आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उनके देवता हमसे अधिक मजबूत हैं। लेकिन न्यायाधीश और सैमुअल इस बात पर जोर देते हैं, नहीं, नहीं, जब आप हारते हैं, तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आपने पाप किया है, और प्रभु आपको दंडित कर रहे हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि ये देवता भगवान से अधिक शक्तिशाली हैं, और इसलिए आपको उनकी पूजा करने की आवश्यकता है। नहीं, नहीं, नहीं। इसका मतलब है कि आपने भगवान की पूजा नहीं की है, और वह आपको दंडित कर रहे हैं।

लेकिन रास्ते में प्रभु ने प्रदर्शित किया कि वह इन सभी देवताओं, दागोन, बाल और उन सभी से अधिक शक्तिशाली है। तो इस विवाद का यही उद्देश्य है जैसा कि हम इसे इन ग्रंथों में देखते हैं। मैं पश्चाताप के बारे में भी बात करना चाहता हूँ।

मुझे लगता है कि 1 शमूएल 7 में इस कहानी में पश्चाताप के बारे में सीखने के लिए कुछ है। मैंने पहले कहा था कि विषयों में से एक यह है कि पश्चाताप और भगवान के प्रति नई निष्ठा ने मुक्ति और एक नए रिश्ते का द्वार खोल दिया है। लेकिन मुझे लगता है कि इन कहानियों से हम कुछ सबक सीख सकते हैं कि पश्चाताप क्या है। कई अवलोकन.

सबसे पहले मैंने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है। पश्चाताप आरंभ करने के लिए परमेश्वर के पथभ्रष्ट लोग जिम्मेदार हैं। यह इज़राइल के लिए सच था।

यह आज सच है। मूसा ने व्यवस्थाविवरण अध्याय 30 में अनुमान लगाया था। मूसा इन लोगों के साथ रहा था।

उन्होंने इन लोगों से संघर्ष किया था। उनके द्वारा उनका अपमान किया गया था। उसके धैर्य की कई बार परीक्षा हो चुकी थी, और उसने अनुमान लगाया था कि इस्राएल वास्तव में परमेश्वर की अवज्ञा करेगा।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 30 के अनुसार ऐसा होगा, और उन्हें निर्वासन का अनुभव होगा। लेकिन उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि बहाली संभव है। लेकिन ईश्वर के साथ इज़राइल के मेल-मिलाप का वर्णन करते हुए, उन्होंने लोगों की जिम्मेदारी पर जोर दिया कि वे पहला कदम उठाएं, जैसे कि वे अपने पापों पर सावधानीपूर्वक विचार करते हैं।

उन्हें एहसास है कि हमने पाप किया है, इसलिए हम निर्वासन में हैं। तब उन्हें प्रभु के पास लौटना चाहिए और अपने पूरे दिल और अपनी पूरी आत्मा से उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। तब प्रभु करुणा में प्रतिक्रिया देंगे, लोगों को उनकी भूमि पर पुनर्स्थापित करेंगे, और उनके चरित्र को बदल देंगे, जिससे उनके लिए प्रभु के प्रति अपनी नई प्रतिबद्धता को बनाए रखना संभव हो जाएगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह घटनाओं का पैटर्न और क्रम है। और आप इसे इस कहानी में देखते हैं। लेकिन आइए संक्षेप में वापस जाएं और उस व्यवस्थाविवरण अध्याय 30 के अंश को देखें क्योंकि यह उस पैटर्न को प्रस्तुत करता है जिसे हम 1 शमूएल 7 में देखते हैं। जब ये सभी आशीर्वाद और शाप मैंने तुम्हारे सामने रखे हैं, और तुम उन्हें दिल से लेते हो, जहां भी हो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें राष्ट्रों के बीच तितर-बितर कर देता है।

ऐसा 1 शमूएल 7 में नहीं हुआ था, लेकिन यह अंततः इज़राइल के साथ हुआ। वे निर्वासन में चले जाते हैं, उत्तरी राज्य और फिर दक्षिणी राज्य। और जब तुम और तुम्हारी सन्तान अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ, और जो कुछ मैं आज तुम्हें आज्ञा देता हूं उसके अनुसार पूरे मन और सारे प्राण से उसकी आज्ञा मानो, जैसा लोगों ने 1 शमूएल 7 में किया, तो उन्होंने कहा, हम यहोवा की खोज करना चाहते हैं, हम उसके पास वापस आना चाहते हैं, हम अपने पाप का पश्चाताप करते हैं।

और यह साबित करने के लिए कि हम वास्तव में पश्चाताप कर रहे हैं, हम इन मूर्तियों को फेंकने जा रहे हैं। तब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग्य को फेर देगा, और तुम पर दया करेगा, और तुम को उन सब जातियों में से जहां उस ने तुम को तितर-बितर किया था, फिर इकट्ठा करेगा। यदि आप उसे दिखाएंगे कि आप काम से मतलब रखते हैं, तो वह हस्तक्षेप करेगा और वह आपको वापस ले आएगा।

चाहे तुम्हें स्वर्ग के नीचे सबसे दूर देश में निर्वासित कर दिया गया हो, वहां से तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें इकट्ठा करेगा और वापस ले आएगा। वह तुम्हें उस देश में ले आएगा जो तुम्हारे पुरखाओं का है, और तुम उस पर अधिकार करोगे। वह तुम्हें तुम्हारे पुरखाओं से भी अधिक समृद्ध और गिनती में बढ़ाएगा।

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हृदयों का, न केवल तुम्हारे शरीर का, तुम्हारे हृदयों का, और तुम्हारे वंशों के हृदयों का भी खतना करेगा, कि तुम उससे अपने सारे मन और सारे प्राण से प्रेम करो, और जीवित रहो। और फिर प्रभु आपके शत्रुओं पर ये श्राप डालने जा रहे हैं और तब आप

प्रभु की आज्ञा मानेंगे और उनके आशीर्वाद का अनुभव करेंगे। यही वह पैटर्न है जिसे हम व्यवस्थाविवरण में देखते हैं और यह यिर्मयाह और ईजेकील में भी माना जाता है।

जब लोग पश्चाताप करते हैं, तो प्रभु एक नई वाचा के माध्यम से, उनके साथ अपने रिश्ते को फिर से स्थापित करने जा रहे हैं। वह उनके दिल और दिमाग को बदल देगा। लेकिन बाइबल में हमेशा एक संतुलन होता है।

आप जानते हैं, आर्मिनियाई लोग मानवीय जिम्मेदारी पर जोर देना चाहते हैं। केल्विनवादी दैवीय संप्रभुता पर जोर देना चाहते हैं। लेकिन दोनों संतुलन में हैं और आप इसे इस परिच्छेद में और सैमुअल में हमारे परिच्छेद में देख सकते हैं।

हम जिम्मेदार हैं। हम पश्चाताप करने और प्रभु की ओर मुड़ने के लिए जिम्मेदार हैं। मुझे लगता है कि बाइबल, जब समग्र रूप से देखी जाती है, तो हमें सिखाती है कि हम वास्तव में ईश्वरीय प्रेरणा के बिना ऐसा भी नहीं कर सकते।

लेकिन मेरी धार्मिक समझ में, पुनर्जनन आस्था से पहले नहीं आता। डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी का सैद्धांतिक कथन, जिसका मैं पालन करता हूँ, यह बात स्पष्ट करता है कि विश्वास पुनर्जनन से पहले होता है। कुछ धर्मशास्त्री इसके विपरीत तर्क देंगे।

हम यहां जो देख रहे हैं वह यह है कि लोग भगवान के पास वापस आ रहे हैं। और फिर जब वे ऐसा करते हैं, तो प्रभु जानते हैं कि वे इसे कभी भी कायम नहीं रख पाएंगे। और इसीलिए यिर्मयाह और यहजेकेल के पास नई वाचा का यह दर्शन है।

इसीलिए भगवान ने हमें आत्मा का उपहार दिया है। आत्मा के उपहार के बिना हम कभी भी पश्चाताप नहीं कर सकते। ईश्वर हमें आज्ञाकारी बनने की शक्ति देता है।

लेकिन यह महत्वपूर्ण विषय है कि हम पश्चाताप शुरू करने के लिए जिम्मेदार हैं और भगवान तब सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया देंगे। आप इसे यीशु के उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत के साथ देखते हैं, है न? वह अपने पैसे की मांग करता है और वह चला जाता है। वह एक मनमौजी बेटा है।

आखिरकार, वह अपने पाप के परिणामों से परेशान हो गया है। उसे एहसास होता है कि यह कोई मज़ा नहीं है। पाप वह नहीं है जो उसे समझा जाता है।

और इसलिए, वह अपने पिता के पास घर लौटने का फैसला करता है। पिता उसके पीछे नहीं गए, उसे वापस लाने के लिए अपने मन में कोई जादू नहीं करना पड़ा। नहीं, उनके बेटे ने वापस आने का फैसला किया है।

लेकिन पिता बाहें फैलाए इंतजार कर रहे हैं और वह उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़ते हैं। वह बड़ी प्रसन्नता के साथ बाहें फैलाकर उसका स्वागत करता है। और बाइबल कहती है कि परमेश्वर और पापियों के साथ भी ऐसा ही है।



जब पापी पश्चाताप करने और वापस आने का निर्णय लेते हैं, तो भगवान वहां मौजूद होते हैं। वह पापी को गले लगाने और उसका वापस स्वागत करने के लिए तैयार और इच्छुक है। इसलिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन और अपने पाप का स्वामित्व लें।

जब हमने पाप किया है और हम उसे पहचानते हैं, तो हमें पश्चाताप करने की आवश्यकता है। हमें ईश्वर के पास लौटने और उसे ठोस तरीकों से दिखाने की जरूरत है कि हमारा वास्तव में काम से मतलब है। और वह इसका ख्याल रखेगा।

वह हमसे वहां मिलेंगे और वह हमें बदल देंगे और हमें अपनी आत्मा से भर देंगे यदि हम पहले से ही विश्वासी हैं। यदि आप नहीं हैं तो हमें उसकी आत्मा का उपहार दें। हम यहां यह भी देखते हैं कि पश्चाताप का एक कॉर्पोरेट आयाम हो सकता है।

जब वाचा समुदाय के अलग-अलग सदस्यों ने समान पापों में एक साथ भाग लिया है, तो पश्चाताप केवल कुछ व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला कार्य नहीं है। लेकिन कभी-कभी व्यक्तियों का एक समूह सामूहिक रूप से एक साथ आ सकता है और कह सकता है कि हमने भगवान के खिलाफ पाप किया है और एक समूह के रूप में हम इन कुछ पापों को साझा करते हैं। हम सामूहिक रूप से पश्चाताप करने जा रहे हैं।

और इस्राएल यहोवा के सामने यही करता है। और मुझे लगता है कि कई बार चर्च के लिए भी यही काम करना उचित होता है। चर्च यह मान सकता है कि हमने कुछ खास तरीकों से पाप किया है और सामूहिक रूप से हम इसे स्वीकार करेंगे।

एक तीसरा बिंदु जो मैं यहां देखता हूं वह यह है कि पश्चाताप ईमानदार उद्देश्यों से शुरू होता है। लेकिन इसमें सिर्फ भावना ही नहीं बल्कि कार्रवाई भी शामिल है। जब हम मार्ग से गुजरे तो हमने इस पर बात की।

पश्चाताप का सार बदला हुआ व्यवहार है, जिसमें अक्सर आपके पूर्व व्यवहार और निष्ठाओं का आमूल-चूल खंडन शामिल होता है। प्रतीकात्मक अनुष्ठान, और पाप की स्वीकारोक्ति पश्चाताप के साथ हो सकती है, लेकिन वे इसकी केवल औपचारिक अभिव्यक्तियाँ हैं। बदला हुआ व्यवहार वास्तव में वही है जो ईश्वर चाहता है।

जॉन द बैपटिस्ट ने यह तब कहा जब वह जॉर्डन में बपतिस्मा देते हुए लोगों से पश्चाताप करने की अपील कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आपको पश्चाताप, नेक कर्मों का फल दिखाने की जरूरत है। और यह कुछ ऐसा है जिसे हम नये नियम में देखते हैं।

एक और सिद्धांत जो मुझे लगता है कि हम यहां देखते हैं वह यह है कि पश्चाताप का परिणाम एक सच्चे ईश्वर की विशेष पूजा है। आधुनिक पश्चिमी परिस्थिति में रहने वाले हमारे लिए यह उतनी बड़ी समस्या नहीं हो सकती है, जहां हमें बहुत अधिक बहुदेववाद नहीं दिखता है। बहुत से लोग ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे या वे उसे अनदेखा कर रहे थे, लेकिन उनके विचार में, ईश्वर एक है और वे पश्चाताप करते हैं और उसके पास आते हैं।

इसका मतलब अन्य देवताओं को अस्वीकार करना नहीं है, लेकिन पश्चिम कुछ मामलों में अद्वितीय है। वहाँ विशाल विश्व में ऐसे लोग हैं जो जब एक सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ते हैं तो उन्हें अन्य देवताओं को अस्वीकार करना पड़ता है जिनकी वे पूजा करते रहे हैं। उन्हें इन सब से छुटकारा पाना होगा।

क्षेत्रों में सुसमाचार ले जाते हैं तो हम सुनिश्चित करते हैं कि वे इसे समझें। समन्वयवाद के लिए कोई जगह नहीं है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि आप यहोवा, एक सच्चे ईश्वर की पूजा करें, और आप उसके साथ-साथ इन अन्य देवताओं की भी पूजा कर सकते हैं या आप किसी तरह उनके बारे में जो विश्वास करते हैं उसे उसमें मिला सकते हैं।

नहीं - नहीं। तुम्हें इन अन्य देवताओं को अस्वीकार करना होगा। और इसका मतलब यह हो सकता है कि अपने परिवार को अस्वीकार कर दें क्योंकि वे नहीं समझते हैं और आप जो कर रहे हैं उसकी वे सराहना नहीं करेंगे।

आपको एक सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ना होगा और ईश्वर की उपाधि के अन्य सभी दावेदारों को अस्वीकार करना होगा। और फिर अंत में, पांचवां, पश्चाताप आपको परेशानी से नहीं बचाता है। आप एक अच्छा, सुखी, चिंतामुक्त, परेशानी मुक्त जीवन पाने के लिए पश्चाताप न करें।

नहीं, कभी-कभी जब आप पश्चाताप करते हैं तो चीजें बदतर हो जाती हैं क्योंकि यदि आप वास्तव में पश्चाताप कर रहे हैं और केवल भगवान और भगवान के प्रति वफादार बन रहे हैं तो ऐसे लोग होंगे जो इसे पसंद नहीं करेंगे। आपके शत्रु होंगे।

और हम इसे इस कहानी में देखते हैं। चूँकि वे पश्चाताप कर रहे हैं और शमूएल उनके लिए मध्यस्थता कर रहा है और सौदे पर मुहर लगाने के लिए औपचारिक तरीके से प्रभु के सामने आ रहा है, तो कौन आता है? पलिशितियों। पलिशितियों ने आक्रमण करना आरम्भ कर दिया।

लेकिन पश्चाताप और ईश्वर के साथ मेल-मिलाप कठिन परिस्थितियों के बीच ईश्वरीय सहायता और समर्थन लाता है और यदि ईश्वर चाहे तो दुश्मनों से सुरक्षा प्रदान करता है। और यही हम यहां देखते हैं। वे पश्चाताप करते हैं, लेकिन पलिशती हमला करते हैं क्योंकि वे ऐसा कर रहे हैं।

परन्तु प्रभु अपने लोगों की ओर से हस्तक्षेप करता है। तो, यह वास्तव में एक दिलचस्प मार्ग है जो हमें पश्चाताप की प्रकृति के बारे में कुछ जानकारी देता है। और हम इस अध्याय में उभरते हुए विषयों को देखते हैं जिन्हें हम संपूर्ण बाइबिल में भी देखते हैं।

तो, यह उस विशेष विषय को संबोधित करने के लिए एक अच्छा मार्ग है। ठीक है, मैं चाहता हूँ कि इज़राइल ने प्रभु में इस मजबूत विश्वास को बनाए रखा होता जिसे हम 1 सैमुअल अध्याय 7 में देखते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि कभी-कभी लोग वास्तव में पश्चाताप करते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह कायम रहेगा। जब मुसीबत आती है, तो कभी-कभी भगवान पर भरोसा न करने का प्रलोभन होता है जैसा आपको करना चाहिए।

और हम अपने अगले पाठ में 1 शमूएल अध्याय 8 में ऐसा होते हुए देखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 5, 1 शमूएल 7, पश्चाताप और विजय है।